फिलेमोन

मसीही विश्वासियों के लिए "फिलेमोन" नामक बाइबॅल-पुस्तक का एक अध्ययन

PHILEMON

First Hindi Edition : May-2009

Translated into Hindi by	:	**J.P. Pandey**
Assisted by	:	**R.K. Khullar**

Originally published in English by the Fellowship Bible Church, 3217, Middle Road, Winchester, VA. 22602 (U.S.A.), with the title "Lessons in Philemon for Growing Believers", edited by Scott and Tim Mcmanigle, and the same is based on the New Tribes Mission's method of chronologically teaching the scripture.

Copyright © The Fellowship Bible Church, Winchester, VA. (U.S.A.). All rights reserved.

फिलेमोन

नामक

बाइबॅल–पुस्तक का एक संक्षिप्त अध्ययन

संत पौलुस ने यह पत्री अपने एक मित्र फिलेमोन के नाम लिखी थी। फिलेमोन कुलुस्से नामक नगर में रहता था। उस नगर की कलीसिया के लोग फिलेमोन के घर पर ही एकत्रित होते थे। कुलुस्सियों नामक पुस्तक इसी कलीसिया को लिखी गई थी। पौलुस ने (कुलुस्सियों और फिलेमोन नामक) इन दोनों पत्रियों को अपने रोमन कारावास के दौरान लिखा था। इन दोनों पत्रियों को एक ही समय लिखा गया था और तुखिकुस नामक व्यक्ति के साथ कुलुस्से भेज दिया गया था (कुलु0 4:7—9)। जब तुखिकुस इन पत्रियों को कुलुस्से ले गया तो उसके साथ उनेसिमुस नामक व्यक्ति भी था। इसी व्यक्ति (उनेसिमुस) के बारे में पौलुस ने, अपने मित्र फिलेमोन को, यह पत्री लिखी। फिलेमोन को लिखी गई इस पत्री को समझने से पूर्व उनेसिमुस के बारे में कुछ जानना ज़रूरी है।

उनेसिमुस, रोम जाने से पूर्व, कुलुस्से में रह रहा था। वह एक गुलाम (दास) था,

और फिलेमोन उसका मालिक (स्वामी) था। उनेसिमुस, अपने स्वामी फिलेमोन के यहां से भाग कर, रोम में रह रहा था। शायद वह यह सोच बैठा था कि रोम जैसे बड़े शहर में उसे कोई नहीं खोज (पकड़ या पहचान) पाएगा। बहरहाल, परमेश्वर की दया व प्रेम से वह पौलुस के सम्पर्क में आया और उसके द्वारा सुसमाचार की शिक्षा पाकर प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगा था।

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के बावजूद, उनेसिमुस अपने मालिक फिलेमोन के यहां से पैसा चुराकर भागा हुआ एक दास (नौकर अर्थात् भगोड़ा गुलाम) था। उनेसिमुस यह समझने लगा था कि उसे अपने मालिक के पास वापस जाना चाहिए, लेकिन वह यह नहीं समझ पा रहा था कि फिलेमोन उसके साथ कैसा व्यवहार करेगा — जेल में डाल देगा या मार डालेगा? फिलेमोन की सम्भावित प्रतिक्रिया को पहचानते हुए, पौलुस ने उससे इस पत्र द्वारा निवेदन किया कि उनेसिमुस को एक

और मौका देकर अपने दास की तरह स्वीकार करे — इतना ही नहीं, एक (मसीही) भाई की तरह। पौलुस, उनेसिमुस से इतना प्रेम करता था कि उसने फिलेमोन से यह कहा कि उसे इस प्रकार ग्रहण करे, मानो स्वयं पौलुस को ग्रहण कर रहा हो।

"मसीह यीशु के बन्दी पौलुस तथा भाई तीमुथियुस की ओर से, प्रिय भाई एवं सहकर्मी फिलेमोन" (फिले0 1:1)। यहां पहले पद में पौलुस ने स्वयं को सिर्फ "मसीह यीशु का बन्दी" कहा है। अन्य पत्रियों में उसने स्वयं के लिए "प्रेरित" शब्द भी इस्तेमाल किया है, किन्तु यहां नहीं। संभवतः ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्रायः उसे ऐसे लोगों को पत्रियां लिखनी पड़ीं जिन्हें झूठे शिक्षकों से खतरा था और उसकी शिक्षा पर अविश्वास दर्शा रहे थे। ऐसे लोगों को उसकी प्रेरिताई की याद दिलाना जरूरी था। यह पत्री फिलेमोन को लिखी गई थी जो पौलुस का मान–सम्मान करता था और उसे पौलुस की प्रेरिताई

की याद दिलाना आवश्यक नहीं था।

इसके अतिरिक्त, अपने कारावास के प्रति पौलुस की मनोवृत्ति पर भी ध्यान दें। यद्यपि उसे झूठे दोषारोपण के आधार पर जेल में डाल दिया गया था, फिर भी उसने किसी के प्रति क्रोध व कड़ुवाहट नहीं रखा और न ही अपने लिए तरस (सहानुभूति) तलाशता फिरा। उसने स्वयं को किसी मनुष्य का कैदी नहीं समझा। इसके बजाय उसने स्वयं को परमेश्वर का कैदी समझा — उसकी समस्त आशा, प्रत्याशा सिर्फ प्रभु परमेश्वर में थी (भज0 62:5)। हम जिस संसार में रहते हैं, वह पाप—स्रापित है। यदि हम शारीरिकता के सहारे जीते हैं तो हमारी दृष्टि वर्तमान परिस्थितियों पर ही केन्द्रित रहती है। यदि वर्तमान हालात अच्छे होते हैं तो हम खुश रहते हैं, और यदि वर्तमान हालात खराब होते हैं तो हम नाखुश, नाराज एवं निराश होते हैं। इसके विपरीत पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत करने वाला विश्वासी अपनी वर्तमान परिस्थितियों से

परे मसीह पर अपनी दृष्टि लगाए रहने में समर्थ होता है।

"और हमारी बहिन अफफिया, हमारे साथी—योद्धा अर्खिप्पुस तथा तुम्हारे घर में एकत्रित होने वाली कलीसिया को : हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे" (फिले0 1:2—3)। अफफिया, संभवतः फिलेमोन की पत्नी थी और अर्खिप्पुस शायद उसका बेटा रहा हो। उसके "घर में एकत्रित होने वाली कलीसिया" कुलुस्सियों की मंडली थी, जिसे पौलुस ने कुलुस्सियों नामक पत्री लिखी थी। जैसा कि पौलुस की अन्य पत्रियों से स्पष्ट है, पौलुस की यह प्रबल इच्छा थी कि उसके द्वारा लिखी गई बातों को पढ़ने वालों में 'अनुग्रह और शांति बढ़ती' रहे।

"मैं तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण कर के अपने परमेश्वर का सदैव धन्यवाद करता हूं, क्योंकि मैं तुम्हारे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनता हूं जो प्रभु यीशु तथा समस्त पवित्र लोगों के प्रति है; और

मैं प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारे विश्वास की सहभागिता, प्रत्येक भली वस्तु के ज्ञान द्वारा जो तुम में मसीह के लिए है, प्रभावशाली हो। हे भाई, मुझे तुम्हारे प्रेम से बहुत ही आनन्द और चैन मिला है, क्योंकि तुम्हारे द्वारा पवित्र लोगों के मन हरे–भरे हो गए हैं" (फिले0 1:4–7)। फिलेमोन के जीवन–आचरण द्वारा प्रकट हो रहे 'प्रेम और विश्वास' के लिए पौलुस ने पिता परमेश्वर को बहुत धन्यवाद अर्पित किया। क्रूस पर सम्पन्न उद्धार–कार्य पर फिलेमोन के विश्वास से उसके जीवन में पवित्र आत्मा का यह **प्रेम** रूपी फल उत्पन्न हुआ। फिलेमोन, **विश्वास** के सहारे, (पवित्र) आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत कर रहा था, अतएव उसके जीवन–व्यवहार से प्रकट **आत्मा** के इस (**प्रेम** रूपी) फल द्वारा "पवित्र लोगों के मन हरे–भरे" हो रहे थे। छठवें पद में पौलुस ने यह भी प्रार्थना किया कि फिलेमोन के "विश्वास की सहभागिता, प्रत्येक भली वस्तु के ज्ञान के द्वारा, जो हम में मसीह के लिए है, प्रभावशाली हो"।

स्मरण रहे कि **रोमियों** की पत्री के सातवें अध्याय के अट्ठारहवें पद में पौलुस ने यह लिखा है : "मैं जानता हूं कि मुझमें अर्थात् मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता"। मसीह द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए उद्धार—कार्य तथा उस महाकार्य से उपलब्ध आशिषों को अपनाते हुए उसी पर आशा—भरोसा रखने से हमारे विश्वास का संचार और अधिक प्रभावशाली होता है। (परमेश्वर की दृष्टि में) मसीह के साथ (हमारे आदम स्वभाव के) सह—क्रूसित होने की (आत्मिक) सच्चाई को अपनाने के द्वारा ही शारीरिकता के शासन व नियंत्रण से छुटकारे का अनुभव प्राप्त होता है और आत्मा की अधीनता में जीने की दिशा में विकास। हम जितना अधिक आत्मा के अनुसार जीवन जीते हैं, उतना ही अधिक मसीह के स्वभाव में ढलते जाते हैं और इस प्रकार अपने मसीही विश्वास के संचार (साक्षी) में और अधिक प्रभावकारी होते हैं। अतः कोई आश्चर्य नहीं कि फिलेमोन के कार्य—व्यवहार द्वारा प्रकटित प्रेमपूर्ण मसीही जीवन—स्वभाव से दूसरों के "मन हरे—भरे हो" रहे थे।

"इसलिए जो उचित है, उसे करने की तुम्हें आज्ञा देने का मसीह में मुझे पर्याप्त साहस तो है, फिर भी उस प्रेम के कारण — मुझ वृद्ध पौलुस के लिए जो अब मसीह यीशु का बन्दी भी है — यही उचित है कि तुझ से आग्रह करूं; मैं तुझ से अपने बच्चे उनेसिमुस के लिए आग्रह करता हूं जिसे मैंने कारावास में जन्म दिया है" (फिले0 1:8—10)। प्रभु के साथ फिलेमोन की स्थिर संगति के कारण तथा दूसरों के लिए प्रकट उसके मसीही प्रेम के कारण पौलुस ने फिलेमोन से अनुरोध किया कि उनेसिमुस को वह पुनः ग्रहण कर ले, क्योंकि अब उनेसिमुस परमेश्वर के घराने में नया जन्म पा चुका था। मसीह का प्रेरित होने के कारण फिलेमोन को पौलुस यह आदेश दे सकता था कि उनेसिमुस को वह पुनः ग्रहण करे; लेकिन पौलुस के प्रति फिलेमोन के प्रेम के कारण पौलुस ने उसे आदेश देने के बजाय उससे अपील की। यहां पौलुस ने उनेसिमुस को अपना 'बच्चा' (पुत्र या संतान) कह कर

संबोधित किया है, क्योंकि पौलुस के द्वारा वह प्रभु यीशु मसीह की पहचान में आया था। फिलेमोन का घर छोड़कर भागने से पहले उनेसिमुस मसीह पर विश्वास करने वाला जन नहीं था। बहरहाल, प्रभु परमेश्वर द्वारा ऐसे हालात पैदा किए गये कि वह रोम पहुंचने पर वहां की जेल में कैद पौलुस के सम्पर्क में आया और उसकी संगति से प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने लगा। पौलुस का जीवन हम सबके लिए एक महान उदाहरण है। यद्यपि वह कैद में था और उसकी प्रमुख सेवा बाधित थी, तथापि वह पवित्र आत्मा के चलाए जीवन जी रहा था। अतएव प्रभु परमेश्वर (द्वारा तैयार किए गये) ऐसे लोगों को उसके सम्पर्क में लाया जिन्हें आशापूर्ण सुसमाचार सुनने की जरूरत थी। कुछ इसी प्रकार हमारे जीवन में भी वह कार्य करता है। पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत करने पर वह हमें ऐसी आत्मिक भूख–प्यास वाले लोगों के सम्पर्क में ले जाता है जो पहले से प्रभु का वचन

सुनने एवं अपनाने के लिए तैयार किए गये हैं।

"जो इससे पूर्व तो तेरे लिए किसी काम का न था, परन्तु अब तेरे और मेरे दोनों ही के लिए उपयोगी है" (फिले0 1:11)। **उनेसिमुस** शब्द का अर्थ है — **उपयोगी**। प्रभु यीशु मसीह को पाने से पूर्व उनेसिमुस अपने मालिक के यहां से भागा हुआ एक अनुपयोगी गुलाम (भगोड़ा) था। उनेसिमुस के मन—परिवर्तन के पश्चात् पौलुस को यह भरोसा था कि वह अपने (मसीही) विश्वास के अनुसार जीवन—आचरण करते हुए फिलेमोन के लिए उपयोगी साबित होगा। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के परिणामस्वरूप किसी व्यक्ति के जीवन में आने वाले परिवर्तन का यह एक सुन्दर एवं अद्‌भुत उदाहरण है।

उद्धार—प्राप्ति से पूर्व हम परमेश्वर से पृथकता एवं शत्रुता की अवस्था में होते हैं (रोमि0 5:6—10)। यह अवस्था मिट्‌टी के टूटे हुए, अनुपयोगी एवं फेंकने लायक पात्रों जैसी होती है। बहरहाल, अपने

मन–परिवर्तन के पश्चात् हम (मसीह के) लहू से खरीदे गये परमेश्वर की संतान हो जाते हैं, जिन्हें उसने पूर्णरूपेण अपना लिया है और जिनका उसके साथ पुनः मेल–मिलाप हो गया है। इतना ही नहीं, अब हमें एक नया स्वभाव मिला है। जब हम विश्वास के सहारे (मसीह में प्राप्त) नये जीवन के अनुसार चलते हैं, तब परमेश्वर इस पतित एवं पाप–स्रापित संसार में हमारे द्वारा मसीह का प्रेमपूर्ण जीवन (स्वभाव) प्रकट करता है। इसके विपरीत, यदि हम अपनी शारीरिकता के अनुसार जीवन बिताते हैं तो (परमेश्वर की संतान होने के बावजूद) अनुपयोगी, अविश्वासियों समान दिखते हैं।

"मैंने उसी को, अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, स्वयं तुम्हारे पास भेज दिया है। मैं तो चाहता था कि उसे अपने पास ही रखूं कि मेरे कारावास में जो सुसमाचार के कारण है, तेरी ओर से मेरी सेवा कर सके; परन्तु मैंने बिना तेरी सहमति के कुछ भी करना उचित न समझा, कि तेरी यह

भलाई दबाव से नहीं, वरन् स्वेच्छा से हो" (फिले0 1:12—14)। पौलुस कारावास में था और अपनी अनेक आवश्यकताओं को स्वयं पूरा नहीं कर सकता था। इसलिए उनेसिमुस ने पौलुस की सेवा—सहायता करने की जिम्मेदारी ले रखी थी। इस प्रकार, पौलुस के लिए वह बहुत मददगार साबित हुआ था। अतः उनेसिमुस को (फिलेमोन की ओर से) अपनी सेवा के लिए रोक रखना पौलुस के लिए बहुत सुखद होता; लेकिन फिलेमोन की अनुमति के बगैर ऐसा करना उसने उचित नहीं समझा। पौलुस ने स्पष्ट किया कि वह फिलेमोन पर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालना चाह रहा था। पौलुस यह चाहता था कि फिलेमोन जो कुछ करे स्वेच्छा, स्वतंत्रता व प्रसन्नता से करे। यही बात आज की मंडलियों में भी सच है। हम अपनी कलीसिया के लोगों को सेवा करने, दान देने या अन्य प्रकार के जीवन—आचरण सम्बन्धी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए नियम, अनुशासन या

व्यवस्था की अधीनता में बांध कर धर्म—कर्म चला सकते हैं, लेकिन ऐसे दबाव से उत्पन्न कार्य—व्यवहार का आधार—स्रोत उनका 'आंतरिक नवजीवन' नहीं होगा। इसके बजाय, जब मसीह के विश्वासियों को आत्मा की अधीनता में जीवन व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तब उनकी अन्तरात्मा में पाये जाने वाले ख्रीष्त—जीवन से भले कार्य प्रकट होते हैं।

"क्योंकि क्या जाने वह तुझ से कुछ समय के लिए इसीलिए अलग हुआ हो कि वह सर्वदा तेरे पास रहे, पुनः अब दास की नाईं नहीं वरन् दास से भी बढ़कर विशेषकर मेरे लिए तो एक प्रिय भाई की तरह, पर तेरे लिए तो शरीर और प्रभु दोनों में इससे भी कहीं बढ़कर" (फिले0 1:15—16)। संभवतः फिलेमोन को (अपनी शारीरिकता में) उनेसिमुस द्वारा की गई गलती की ओर ही अंगुली उठाने का प्रबल प्रलोभन होता। इसलिए पौलुस ने फिलेमोन के ध्यान—मन को प्रभु परमेश्वर

तथा उसके कार्य—उद्देश्य की ओर आकर्षित किया, जिससे वह यह समझ सके कि उनेसिमुस की वापसी एक भगोड़े गुलाम के वापस लौटने से बहुत बढ़कर बात थी — इस घटना के परिणामस्वरूप उनेसिमुस के जीवन का शाश्वत् लक्ष्य ही बदल गया। अतः पौलुस ने फिलेमोन को यह याद दिलाया कि जब वह उनेसिमुस को पुनः प्राप्त करेगा तो उसे एक दास मात्र ही नहीं मिलेगा बल्कि मसीह में एक भाई भी मिलेगा।

"अतः यदि तू मुझे अपना साझीदार समझता है तो उसे भी उसी तरह ग्रहण कर जैसे मुझे करता है। परन्तु यदि उसने तुझे किसी भी प्रकार से हानि पहुंचाई है अथवा किसी भी वस्तु के लिए वह तेरा ऋणी है तो उसको मेरे खाते में लिख लेना; मैं पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूं कि मैं इसे भर दूंगा — कहीं मुझे ऐसा कहना न पड़ जाए कि तेरा तो सम्पूर्ण जीवन ही मेरा ऋणी है" (फिले० 1:17—19)। पौलुस की बड़ी इच्छा थी कि

फिलेमोन द्वारा उनेसिमुस ग्रहण किया जाए। इसके अतिरिक्त उनेसिमुस के प्रति पौलुस का गहरा (प्रबल) प्रेम भी स्पष्ट है। इसीलिए तो उन्नीसवें पद में ऐसा लगता है जैसे कि पत्री लिखने वाले से कलम छीनकर पौलुस ने स्वयं यह लिपिबद्ध किया — "मैं पौलुस अपने हाथ से यह लिख रहा हूं कि मैं इसे भर दूंगा"। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर का प्रेम प्रबल है। पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन जीने वाले भी दूसरों के प्रति प्रबल प्रेम रखते हैं — प्रसन्नतापूर्वक दूसरों के लिए खर्च करते हैं और खर्च हो जाने को तैयार रहते हैं (दू0कुरि0 12:15)।

फिलेमोन का ध्यान परमेश्वर की ओर पुनः आकर्षित करते हुए पौलुस ने उसे यह याद दिलाया कि यदि प्रभु परमेश्वर ने पौलुस को फिलेमोन के पास भेजकर सुसमाचार प्रदान नहीं किया होता तो उसे अनन्त जीवन प्राप्त नहीं हुआ होता। जब हम अपने उद्धार—प्राप्ति से पूर्व के जीवन पर नज़र डालते हैं तब परमेश्वर के

अनुग्रह को और स्पष्टता से जानने—समझने लगते हैं कि हमें उसकी संतान बनाने के लिए परमेश्वर को हमारे लिए कितनी कीमत चुकानी पड़ी और हमारे लिए क्या—क्या करना पड़ा। ऐसी समझ, दूसरों के प्रति हमारे दृष्टिकोण में बदलाव लाती है, खासकर उनके प्रति जो हमारे साथ गलत या बुरा व्यवहार करते हैं।

"हे भाई, मुझे प्रभु में अब तुझ से यह लाभ पहुंचे कि मसीह में मेरा हृदय हरा—भरा हो जाए। मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर तुझे यह लिखता हूं; मैं यह जानता हूं कि जो कुछ मैं कहूं, उससे कहीं बढ़कर तू करेगा" (फिले0 1:20—21)। पौलुस ने पुनः दृढ़तापूर्वक फिलेमोन से यह आग्रह किया कि उनेसिमुस सम्बन्धी उसके इस अनुरोध को वह स्वीकार करे। फिलेमोन से ऐसी ही आशा करते हुए उसने लिखा : "मैं यह जानता हूं कि जो कुछ मैं कहूं, उससे कहीं बढ़कर तू करेगा"। संभवतः पौलुस को यह

आशा—भरोसा होने लगा था कि उनेसिमुस (जो कि पहले एक गुलाम के तौर पर था) को फिलेमोन (अपनी गुलामी से) मुक्त कर देगा। क्योंकि उपर्युक्त सोलहवें पद में पौलुस यह लिखता है : "पुनः अब दास की नाईं नहीं, वरन् दास से भी बढ़कर... एक प्रिय भाई की तरह"। इस प्रकार, फिलेमोन को पौलुस ने यह दर्शाया कि उनेसिमुस के साथ उसके सम्बन्ध का आधार मसीह में प्राप्त नवजीवन रूपी आध्यात्म होगा न कि सिर्फ मालिक व दास का सम्बन्ध।

"साथ ही मेरे आवास का भी प्रबन्ध कर, क्योंकि मुझे आशा है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे दिया जाऊंगा। इपफ्रास, जो मसीह यीशु में मेरा संगी—बन्दी है, तुझे नमस्कार कहता है, और इसी प्रकार मरकुस, अरिस्तुर्खुस, देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी हैं। प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे" (फिले0 1:22—25)। अपने कारावास के दौरान इस पत्री को लिखते हुए पौलुस को यह उम्मीद थी कि आने

वाले दिनों में शायद उसे कैद से मुक्त कर दिया जाएगा, और तब वह फिलेमोन तथा कुलुस्से की मंडली के पास भेंट करने जाने की सोच रहा था। बेशक, आगे चलकर उसे जेल से छोड़ दिया गया; लेकिन कुछ समय पश्चात् उसे पुनः गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में उसे मृत्यु—दंड सहना पड़ा। इन पदों में जिन अन्य व्यक्तियों को वह अपना अभिवादन भेजता है, वह सभी लोग सुसमाचार के लिए पौलुस के साथ सेवा किए थे। कुलुस्से की मंडली ने इपफ्रास नामक व्यक्ति को पौलुस की सेवा एवं सहायता करने के लिए उसके पास भेज रखा था। मरकुस वही शख्स था जो पौलुस और बरनाबास की एक यात्रा के दौरान उन्हें छोड़कर वापस लौट गया था (प्रेरि0 15:37—38)। इस मरकुस के जीवन में प्रभु परमेश्वर ने अद्‌भुत काम किया होगा, तभी तो अब वह कुलुस्से की मंडली में सेवा कर रहा था! अरिस्तर्खुस और देमास जैसे लोग पौलुस के साथ विश्वासियों को शिक्षा एवं शिष्यता प्रदान करने की सेवकाई में

सहकर्मी रहे। लूका नामक व्यक्ति पौलुस की तमाम यात्राओं के दौरान उसके साथ रहा। इसी लूका नामक विश्वासी का इस्तेमाल करते हुए पवित्र आत्मा ने 'लूका रचित सुसमाचार' लिपिबद्ध कराया।

✝ ✝ ✝

इस श्रंखला की पुस्तकों का निम्नलिखित क्रम में अध्ययन ज्यादा लाभप्रद होगा :

1. परमेश्वर-कृत उद्धार
2. प्रेरितों के कार्य
3. वह मुझमें और मैं उसमें
4. रोमियों
5. इफिसियों
6. पहला कुरिन्थियों
7. पहला तीमुथियुस
8. तीतुस
9. पहला और दूसरा थिस्सलुनीकियों
10. प्रकाशितवाक्य
11. गलातियों
12. कुलुस्सियों
13. दूसरा कुरिन्थियों
14. फिलिप्पियों
15. फिलेमोन
16. दूसरा तीमुथियुस

इन पुस्तकों की और प्रतियां को प्राप्त करने हेतु इन फोन नम्बरों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं :